Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja college, Ara

Notion of God According to Augustine (Part-II)

चर्चा करते हुए Augustine ने ईश्वर और जगत के सम्बन्ध में बतलाया है कि यदि विश्व हो दैवीक बन जाएगा। इसलिए Augustine ने इस विश्व को ईश्वर का विकार नहीं माना बल्कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर इस विश्व की सृष्टि स्वेच्छा से करता है। ईश्वर इस संसार की आत्मा नहीं है, न ही यह संसार ईश्वर का शरीर है। ईश्वर ने अपनी इच्छा स्वतन्त्रता से इस संसार की सृष्टि की है और चूंकि संसार की सृष्टि हुई है, इसलिए इसकी शुरुआत मानी जाती है। आलोचक इस विचार पर आपत्ति करते हुए कहते हैं कि काल इस सृष्टि के पहले भी था और ईश्वर ने विशेष समय में इस संसार की सृष्टि की है। Augustine ने इसका जवाब देते हुए बतलाया है कि इसका यह मानना भूल है। सृष्टि के बाहर और इसके पहले न तो दिक् की कल्पना की जा सकती है और न काल की। काल या गति का माप है। जहाँ गति नहीं रहेगी, वहाँ काल की बात नहीं की जा सकती है। अब चूंकि ईश्वर में गति नहीं होती, वह अपरिवर्तनशील है, इसलिए इसमें काल होने का विचार नहीं माना जा सकता। गति की शुरुआत सृष्टि से ही होती है।

Augustine का कहना है कि ईश्वर ने इस विश्व की सृष्टि शून्य से की है। यहाँ पर हम पाते हैं कि यह ईसाई धर्म के नजदीक आ जाता है। सृष्टि धार्मिक दृष्टि से एक रहस्य है लेकिन Augustine में दार्शनिक दृष्टिकोण भी अन्तर्निहित है। अतः वे कहते हैं कि दर्शन सृष्टि की एक युक्तिपरक कारण की खोज करता है। पुनः वे ईश्वर को विश्व में व्याप्त और विश्व से परे भी मानते हैं, यहाँ पर भी Augustine ईसाई धर्म के निकट है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि Augustine ने ईश्वर के सम्बन्ध में अपने विचार को प्रस्तुत किया है अपने ईश्वर सम्बन्धी

विचार को प्रस्तुत करने के बाद उन्होंने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए दो प्रमाण भी दिए हैं, किन्तु प्रश्नानुसार यहाँ इनकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है।

आलोचना — हम पाते हैं कि Augustine का ईश्वर विचार उसकी मौलिक देन नहीं, वरन् वह Plato और Christianity से प्रभावित रहा है।

पुनः Augustine के अनुसार ईश्वर ने इस संसार की सृष्टि की है किन्तु ईश्वर अपरिवर्तनशील है, जबकि संसार परिवर्तनशील है यहाँ पर यह बात समझ में नहीं आती कि एक अपरिवर्तनशील ईश्वर इस परिवर्तनशील संसार की सृष्टि कैसे करता है?

पुनः आलोचकों का कहना है कि ईश्वर को क्यों इस संसार का अन्तिम कारण माना जाय। ऐसा करना कारण सिद्धान्त को समाप्त करना है, क्यों नहीं हम ईश्वर के सम्बन्ध में भी इसी कारणता की बात को दुहरायें।

इस प्रकार हम पाते हैं कि Augustine का ईश्वर विचार अपनी कुछ कमजोरियों के कारण आलोचना का विषय रहा है किन्तु हमें यह भी कदापि नहीं भूलना चाहिए कि Augustine मध्ययुगीन दर्शन के प्रभावशाली दार्शनिक थे। मध्ययुगीन दर्शन की शुरुआत इन्हीं के समय से हुई और बाद में आनेवाली दर्शन पीढ़ी इन्हीं के दार्शनिक विचारों को और आगे बढ़ाया जैसा कि दर्शन का नियम चलता आया है। अतः हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मध्ययुगीन दर्शन की नींव Augustine के दार्शनिक विचारों पर ही खड़ी हुई है।

X——————X